LIC 12
टी .डी. सी हैंडबुक

समर्थ बनाने वाले लर्निंग के माहौल की रचना

SCERT
स्वाध्यायान्म प्रमदः

STIR education

Directorate of Education
Govt. of NCT of Delhi

इस LIC और इसके मटीरियलके विकास के लिए निम्नलिखित का बहुत-बहुत आभार और धन्यवाद।

डॉ. वी.के. पाठक (CDT मेंबर)

डॉ. बी.पी. पांडे (CDT मेंबर)

डॉ. अनिल तेवतिया (CDT मेंबर)

डॉ. मोहम्मद ज़मीर (CDT मेंबर)

श्री. मुकेश कुमार अग्रवाल (CDT मेंबर)

डॉ. चारु वर्मा (CDT मेंबर)

डॉ. तप्सा वर्मा (CDT मेंबर)

डॉ. श्याम सुंदर (CDT मेंबर)

डॉ. अजय कुमार (CDT मेंबर)

डॉ. संगीता चौधरी (CDT मेंबर)

डॉ. दिनेश कुमार (CDT मेंबर)

डॉ. एम. एम राय (CDT मेंबर)

डॉ. राजेश कुमार (CDT मेंबर)

सुश्री दीपिका मल्होत्रा (CDT मेंबर)

सुश्री अदिति भसीन, मेंटर टीचर, DIET केशव पुरम

सुश्री हरप्रीत कौर, मेंटर टीचर, DIET राजिंदर नगर

श्री रोहित उपाध्याय, मेंटर टीचर, DIET मोती बाग

सुश्री किरण, मेंटर टीचर, DIET आर.के. पुरम

सुनील कुमार, मेंटर टीचर, DIET आर.के. पुरम

दीपक कुमार मित्तल, मेंटर टीचर, DIET मोती बाग

सुनीता चौहान, मेंटर टीचर, DIET मोती बाग

Thank you!

मनीष कु. मीना, मेंटर टीचर, DIET बी.एड. संभाग, SCERT

मालती नारंग, DIET बी.एड. संभाग, मेंटर टीचर, SCERT

संतोष हसीजा, मेंटर टीचर, DIET केशव पुरम

मधुमिता, मेंटर टीचर, DIET केशव पुरम

सुशील शुक्ला, मेंटर टीचर, DIET दिलशाद गार्डन

आशा मैसी, मेंटर टीचर, DIET दिलशाद गार्डन

गुरमीत कुकरेजा, मेंटर टीचर, DIET कड़कड़डूमा

हर्ष भारद्वाज, मेंटर टीचर, DIET कड़कड़डूमा

नीतू छाबड़ा, मेंटर टीचर, DIET पीतमपुरा

संजय कुमार, मेंटर टीचर, DIET पीतमपुरा

नमिता कालरा, मेंटर टीचर, DIET राजिंदर नगर

अजय किशोर, मेंटर टीचर, DIET राजिंदर नगर

LIC 12 में आपका स्वागत है! आशा है कि LIC 11 में आपने चिंतन और सहयोग किया होगा। साथ सीखने के सत्रों, ART मीटिंग्स और DPCM की इस दुनिया में वापस लौटकर हम बहुत उत्साहित हैं।

LIC 12 की थीम: समर्थ बनाने वाले सीखने के माहौल की रचना (Creating an Enabling Learning Environment)

एक ऐसा माहौल बनाना और देना बेहद अहम है जिसमें विद्यार्थियों को सुरक्षा और आत्मविश्वास महसूस हो। अनेक शिक्षाविदों और शोधकर्ताओं ने माना है कि विद्यार्थियों की लर्निंग और विकास को समर्थ बनाने में सुरक्षित और मददगार माहौल की अहम भूमिका होती है। समर्थ बनाने वाले माहौल से विद्यार्थियों को खुशी, आत्मविश्वास और सीखने की प्रेरणा मिलती है। *पर हम इस प्रकार के सक्षम बनाने वाले माहौल की रचना कैसे कर सकते हैं?* LIC 11 में सुरक्षा, जुड़ाव एवं आत्म सम्मान पर फ़ोकस किया गया था , और इन्हीं फ़ोकस क्षेत्रों को आगे बढ़ाते हुए इस LIC में हम कक्षा में सुरक्षा, जुड़ाव एवं आत्म सम्मान विकसित करने के कुछ व्यावहारिक तरीकों पर बात करेंगे। हम कुछ पुरानी और नई रणनीतियों पर नज़र डालेंगे और सोचेंगे कि किस तरह उन्हें कक्षा में सुरक्षा, जुड़ाव एवं आत्म सम्मान को बढ़ावा देने के लिए नए तरीके से उपयोग किया जा सकता है ताकि विद्यार्थियों के लिए समर्थ बनाने वाले लर्निंग के माहौल की रचना हो सके।

हमारे स्कूलों में हमारे लिए और हमारे सहकर्मियों के लिए समर्थ बनाने वाले लर्निंग के माहौल की रचना जारी रखने हेतु हम ***कक्षा अवलोकन*** *(Peer Classroom Observation)* और ***सोच-विचारी चर्चा*** *(Reflective Discussion)* के कौशलों को और मजबूत बनाएँगे।

LIC 12 पूरा कर लेने पर आप इनमें सक्षम हो जाएँगे:

- कक्षा में सुरक्षा, जुड़ाव एवं आत्म सम्मान विकसित करने की व्यावहारिक विधियों की रचना करना, उन्हें ढालना और उनका उपयोग करना।
- कक्षा में सुरक्षा, जुड़ाव एवं आत्म सम्मान को और मज़बूत बनाने के लिए समकक्ष कक्षा अवलोकन के कौशलों को और मज़बूत बनाना।
- यह जानना कि समकक्षों के साथ सोच-विचारी चर्चाओं से किस तरह टीचिंग के तौर-तरीकों को मज़बूत बनाने में मदद मिल सकती है।
- सर्वोत्तम तौर-तरीके शेयर करने और समकक्ष लर्निंग व सहयोग की संस्कृति विकसित करने के लिए सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म का उपयोग करना।

सुरक्षा, जुड़ाव एवं आत्म सम्मान : व्यावहारिक उदाहरण	**समकक्ष कक्षा प्रेक्षण**	**सोच-विचारी चर्चाएँ (कोचिंग)**	**शिक्षा में सोशल मीडिया**

सुरक्षा, जुड़ाव एवं आत्म सम्मान (*Safety, Engagement and Self-esteem*) : व्यावहारिक उदाहरण

आइए दोहराएँ

LIC 11 में हमने कक्षा के तीन फ़ोकस क्षेत्रों - सुरक्षा, जुड़ाव और आत्म सम्मान - पर विस्तार से चर्चा की थी। शुरुआत करने से पहले आइए उन तीन फ़ोकस क्षेत्रों को दोहरा लेते हैं

कक्षा फ़ोकस क्षेत्र	कामयाबी के मापदंड
सुरक्षा	समकक्ष सहायता, संकोच घटाना, सोचने का तरीका शेयर करना
जुड़ाव (एंगेजमेंट)	इसे अर्थपूर्ण बनाना, स्पष्ट निर्देश देना, गतिविधियों की योजना बनाना और विशिष्ट (स्पेसिफिक) फ़ीडबैक देना
सेल्फ़-एस्टीम	स्पेसिफ़िक सराहना, खुद की पॉज़िटिव छवि बनाने में सहयोग, खुद के बारे में सोच-विचार को बढ़ावा देना, समकक्षों से तुलना से बचना।

विस्तारी सवाल-जवाब (Elaborative Questioning): सुरक्षा, जुड़ाव एवं आत्म सम्मान

क्या आपको वह विस्तारी सवाल-जवाब तकनीक याद है जो हमने LIC 4 में कवर की थी? आइए इसे संक्षेप में दोहराते हैं।

यह सवाल पूछने की एक ऐसी तकनीक है जो विद्यार्थियों को अपने जवाबों की व्याख्या देने को प्रेरित करती है और इसमें अधिकतर 'कैसे' और 'क्यों' के सवालों का उपयोग होता है। विस्तार से बताना एक ऐसी रणनीति है जिसमें विद्यार्थी दी गई जानकारी में और संबंधित जानकारी जोड़कर इसे विस्तार देता है। इस तकनीक में सवाल विद्यार्थी या टीचर द्वारा पूछे जाते हैं। विस्तारी सवाल-जवाब एक ऐसी विधि है जो 'कैसे और क्यों' वाले सवालों की श्रृंखला की मदद से सिलसिले की मदद से विद्यार्थियों को और तेज़ी से चीज़ें याद करना और याद करके बता पाने में मदद देती मिलती है। इससे विद्यार्थियों को

चीज़ें याद रखने और उनकी व्याख्या करने में मदद मिलती है। आप इस लिंक पर जाकर पेज 39 पर इस रणनीति के बारे में और पढ़ सकते हैं:

http://scert.delhi.gov.in/sites/default/files/LIC%204%20TDC%20Handbook.pdf

यहाँ

कक्षा में सुरक्षा, सहभागिता और आत्म सम्मान को बढ़ावा देने के लिए विस्तारी सवाल-जवाब का उपयोग क्यों करें?

- विस्तारी सवाल-जवाब से विद्यार्थियों को किसी तथ्य/अवधारणा की व्याख्या करने के लिए जवाब ढूँढने में मदद मिलती है। सीमित उत्तर वाले सवाल से विद्यार्थियों में संकोच और गलती होने का डर पैदा हो सकता है। पर विस्तारी सवाल-जवाब से उन्हें एक सही जवाब देने के दबाव के बिना टॉपिक/तथ्य के बारे में गहराई से सोचने की एक सुरक्षित जगह मिल जाती है। जोड़ियों/समूहों में विस्तारी सवाल-जवाब करने से भी उन्हें एक सुरक्षित माहौल मिलता है जहाँ वे अपनी व्याख्याओं पर बात कर सकते हैं।
- टॉपिक के बारे में विद्यार्थियों का जो पिछला ज्ञान है उससे जोड़कर कैसे और क्यों की व्याख्या करने की जगह देने से उनका आत्म सम्मान बढ़ता है। इससे और गहरे विश्लेषण और तर्कसंगत ढंग से सोचने की जगह मिलती है जिससे विद्यार्थियों का उनकी अपनी योग्यताओं में विश्वास बढ़ता है।
- विस्तारी सवाल-जवाब से और ज्यादा जुड़ाव /सहभागिता की जगह बनती है क्योंकि विद्यार्थी सवालों के जवाब देने हेतु अतिरिक्त जानकारी ढूँढने के लिए अपने समकक्षों यानि सहपाठियों और दूसरे स्रोतों के पास जा सकते हैं। इससे सहभागिता बढ़ती है

मॉडल उदाहरण

सुश्री लक्ष्मी कक्षा VII के अपने विद्यार्थियों को प्रमुख भू-आकृतियों के बारे में पढ़ा रही हैं। उन्होंने नदी (झरने, टेढ़े-मेढ़े बहाव, ऑक्सबो झीलें आदि), समुद्र (समुद्री गुफाएँ, समुद्री चाप, समुद्री खड़ी चट्टानें आदि), हिम (हिमोढ़) और पवन (रेत के टीले, कुकुरमुत्ता चट्टानें, रेत के लोयस) से बनने वाले विभिन्न भू-आकृतियों के बारे में उनसे बात की। विद्यार्थियों को भू-आकृतियों याद हो जाएँ इसके लिए उन्होंने कई तरह के फ़्लो चार्ट इस्तेमाल किए। पर फिर भी, एक महीने तक spaced practiceके बावजूद उन्होंने पाया कि ऐसे कुछ विद्यार्थी हैं जो उन्हें याद नहीं कर पा रहे हैं। उन्हें यह जानकर आश्चर्य हुआ कि इस टॉपिक पर की गई क्विज़ गतिविधि में बहुत कम विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया । इसलिए और वे सोच में पड़ गईं कि अधिकतर गतिविधियों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने वाले उनके विद्यार्थी इस बार क्यों संकोच कर रहे हैं।*? उन्होंने विचार किया कि कहीं यह इसलिए तो नहीं कि उन्होंने विद्यार्थियों को की केवल भू-आकृतियों की सूची के बारे में

पढ़ाया है और शायद वे इन्हें इसलिए याद नहीं कर पा रहे क्योंकि उन्होंने इन भू-आकृतियों के बारे में पर्याप्त गहराई से नहीं सोचा है। साथ ही उन्हें ऐसा भी लगा कि लग रहा है कि गलत जवाब देने के डर के कारण गतिविधियों में विद्यार्थियों का जुड़ाव / एंगेजमेंट कम रहा है। वितरित अभ्यास (spaced practice) के सवालों के अगले सेट में उन्होंने सही या गलत जवाब वाले सवाल पूछने की बजाए बोर्ड पर ये सवाल लिखे:

- रेत के टीले, loess से कैसे अलग हैं?
- झरने क्यों कैसे बनते हैं?
- समुद्री गुफाओं से समुद्री चाप कैसे बनती हैं?

उन्हें बहुत जल्दी पता चल गया कि बहुत से विद्यार्थी इन सवालों का प्रभावी ढंग से जवाब नहीं दे पा रहे हैं, इसलिए उन्होंने इस मौके का सही इस्तेमाल करते हुए कक्षा को छोटे-छोटे समूहों में बाँट दिया और उन्हें बारी-बारी से सवालों पर दोबारा चर्चा करने को कहा। उन्होंने यह भी कहा कि इस बार वे अपनी पाठ्य पुस्तक की मदद ले सकते हैं। वे यह देखकर आश्चर्यचकित हो गई कि कई विद्यार्थियों ने समूह में जवाब साझा करना और उन पर चर्चा करना शुरु कर दिया। इसके बाद उन्होंने पूरी कक्षा को फिर से एक कर दिया और उन्हें जो भी ग़लत तथ्य सुनाई दिए थे उन्हें ठीक किया। अगले पाठ में उन्होंने वही सवाल बोर्ड पर दोबारा लिखे। अगले हफ़्ते उन्होंने इस टॉपिक पर 'कैसे और क्यों' वाले और सवाल दिए। उन्होंने देखा कि अब और भी ज़्यादा विद्यार्थी सवालों के जवाब दे रहे हैं और अपने जवाब में उन्हें आत्मविश्वास महसूस हो रहा है, यहाँ तक कि बड़े समूहों में करने में भी। इस तकनीक पर इतनी कामयाबी पाकर लक्ष्मी ने तय किया है कि वे अगले लेसन से विद्यार्थियों को 'कैसे' और 'क्यों' वाले सवाल बनाने में शामिल करेंगी।

मॉडल उदाहरण पढ़ने के बाद इन सवालों के बारे में सोचें।

1. आपके विचार में सुश्री लक्ष्मी ने यह कैसे पक्का किया कि और भी ज़्यादा विद्यार्थी विभिन्न भू-आकृतियां याद कर पाएँ?
2. *विस्तारी सवाल-जवाब रणनीति* ने कक्षा में सुरक्षा, जुड़ाव एवं आत्म सम्मान हासिल करने में किस तरह मदद की? इन फोकस एरियाज के सफलता के मापदंडों की मदद से समझाएं।
3. आप सुरक्षा, जुड़ाव एवं आत्म सम्मान को बढ़ावा देने के लिए अपने विषय में *विस्तारी सवाल-जवाब* का इस्तेमाल कैसे करेंगे?

कार्य योजना

अब आप यह योजना बना सकते हैं कि आप विद्यार्थियों में **सुरक्षा, जुड़ाव एवं आत्म सम्मान** को बढ़ावा देने के लिए अपनी कक्षाओं में 'विस्तारी सवाल-जवाब' का इस्तेमाल कैसे करेंगे। ऐसा कोई पाठ सोचें जो आपको अगले एक या दो हफ़्तों में पढ़ाना है। और फिर विस्तारी सवाल-जवाब तकनीक की योजना बनाएँ। आप इसके लिए विस्तारी पासे (elaborative dice) का भी इस्तेमाल कर सकते हैं।

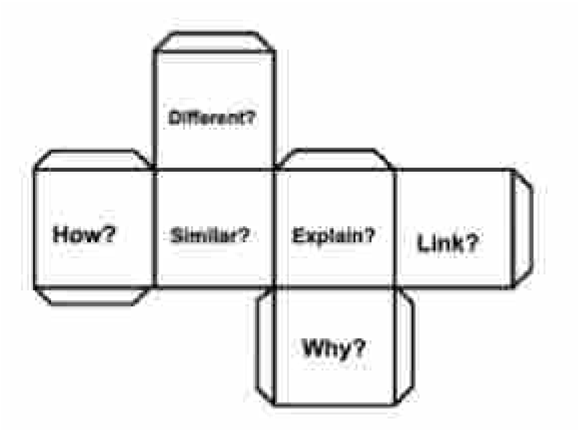

विस्तारी पासा (Elaborative Dice)

RETRIEVAL PRACTICE: सुरक्षा, जुड़ाव एवं आत्म सम्मान

क्या आपको retrieval practices *याद हैं जिन पर हमने LIC 4 में बात की थी? आइए दोहराएँ*

Retrieval practice का मतलब किसी जानकारी को तब याद करने की कोशिश से है जब वह आपके सामने न हो। आसान शब्दों में कहें तो इसका मतलब पहले पढ़े/सीखे जा चुके मटेरियल को दोहराना ताकि उनकी समझ को और ठोस रूप दिया जा सके और उसे दीर्घकालीन स्मृति में बैठाया जा सके। कक्षा में Retrieval practice इन विधियों से इस्तेमाल किए जा सकते हैं

- Think Pair Share
- Brain dump
- Low stake quizzes

आप इस लिंक पर जाकर पेज 42 पर इस रणनीति के बारे में और पढ़ सकते हैं:

http://scert.delhi.gov.in/sites/default/files/LIC%204%20TDC%20Handbook.pdf

कक्षा में सुरक्षा, जुड़ाव एवं आत्म सम्मान को बढ़ावा देने के लिए Retrieval Practices इस्तेमाल क्यों करें?

- Think Pair Share, Brain dump,Low stake quizzes विद्यार्थियों पर केंद्रित होते हैं, वे विद्यार्थियों के जुड़ाव को बढ़ावा देते हैं और इसलिए वे विद्यार्थियों को टॉपिक/मटेरियल गतिविधि में एंगेज होने के लिए प्रेरित करते हैं।
- ऊपर जिन Retrieval Practices पर चर्चा की गई है वे सभी विद्यार्थियों को अपने सहपाठियों के साथ अपने जवाबों पर चर्चा करने की एक सुरक्षित जगह देते हैं। इससे एक भयमुक्त माहौल को भी बढ़ावा मिलता है जिसमें उन्हें आँके जाने या कम ग्रेड मिलने के डर नहीं होता है।
- विद्यार्थियों को सहपाठियों के सहयोग से ये छोटे-छोटे और हासिल करने योग्य कार्य सौंपे जाते हैं जिससे उनका आत्मविश्वास बढ़ता है और हाई सेल्फ़-एस्टीम बनाए रखने में मदद मिलती है। Retrieval Practices के ऐसे रचनाशील तौर-तरीकों में engage होने से विद्यार्थी टॉपिक से जुड़कर अपने ज्ञान के बारे में आत्मविश्वास महसूस करते हैं जिससे वे कक्षा में और भी सहभागिता से भाग लेने के लिए प्रेरित होते हैं।

मॉडल उदाहरण: Low Stake Quizzes

श्री रमेश जाँच-पड़ताल की पद्धति के तौर पर अपनी विज्ञान की कक्षा में नियमित रूप से शॉर्ट टैस्ट लेते रहते हैं ताकि विद्यार्थी खुद को टॉपिक से जोड़े रखें और उसे दोहराते रहें। पर समय के साथ उन्होंने पाया कि कुछ विद्यार्थी इन टैस्ट में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर रहे हैं । जब-जब ये टैस्ट रखे जाते थे, विद्यार्थियों ने तब-तब छुट्टियाँ लेनी शुरु कर दीं। उन्होंने अपने एक सहकर्मी को इस समस्या के बारे में बताया और एक गहन चर्चा के बाद उन्होंने कक्षा में मज़ेदार टीम क्विज़ संचालित करने का फ़ैसला लिया। हर किसी को जोड़े रखने के लिए श्री रमेश ने क्विज़ के आधार पर ग्रेड नहीं दिए और टीम्स को जवाब देने से पहले आपस में बात करने की अनुमति दी। जवाब गलत होने की स्थिति में श्री रमेश ने विद्यार्थियों को अपनी टीम से चर्चा के बाद दोबारा जवाब देने की अनुमति भी दी। श्री रमेश यह देखकर बहुत खुश हुए कि अब ज़्यादा विद्यार्थी क्विज़ में हिस्सा लेने लगे और पाठ में उन्हें रुचि आने लगी। विद्यार्थियों ने विभिन्न टॉपिक पर क्विज़ बनाने और संचालित करने की जिम्मेदारी लेना भी शुरु कर दिया।

मॉडल उदाहरण पढ़ने के बाद इन सवालों के बारे में सोचें:

1. विद्यार्थी श्री रमेश के टेस्ट क्यों छोड़ रहे थे?
2. आपके विचार में, low stake quizzes , high stake quizzes से कैसे अलग हैं?
3. Low stake quiz ने सुरक्षा, जुड़ाव एवं आत्म सम्मान को बढ़ावा देने वाला माहौल बनाने में किस तरह मदद दी?
4. आप सुरक्षा, जुड़ाव एवं आत्म सम्मान को बढ़ावा देने के लिए अपने विषय में *retrieval practices* का इस्तेमाल कैसे करेंगे?

कार्य योजना

अब आप यह योजना बना सकते हैं कि आप विद्यार्थियों में सुरक्षा, जुड़ाव एवं आत्म सम्मान को बढ़ावा देने के लिए अपनी कक्षाओं में *retrieval practices* का इस्तेमाल कैसे करेंगे।

हुक

आइए **हुक दिनचर्या** पर एक नज़र डालें।

हुक, विद्यार्थियों को सीखने के बारे में उत्साहित करने के लिए एक छोटा और आकर्षक परिचय होता है। **हुक दिनचर्या में लेसन को मज़ेदार, आकर्षक और प्रभावशाली बनाकर, समर्थ बनाने वाले लर्निंग के माहौल की रचना करने की क्षमता**

होती है। हुक एक छोटी और परिचयदायी दिनचर्या होती है जो विद्यार्थियों में रुचि जगाती है, उनकी कल्पना को पंख लगाती है और उनमें उत्सुकता पैदा करती है। यह कक्षा को सीखने की यात्रा के लिए तैयार करती है, विद्यार्थियों को मटीरियल के लेवल तक लाती है और उनका ध्यान टॉपिक की ओर खींचती है। अगर यह दिनचर्या ठीक से की जाए तो विद्यार्थी खुद को लेसन के आकर्षण में बँधा हुआ पाते हैं, और उससे गहराई से एंगेज होने के लिए आतुर हो जाते हैं।

कॉग्निटिव साइंस हमें बताता है कि लोग जिस चीज़ को बोरिंग मानते हैं वे उस पर बिल्कुल भी ध्यान नहीं देते हैं। विज्ञापन अपने पहले 30 सेकंड में कामयाब या नाकामयाब हो जाते हैं। TV प्रोग्राम पहले पाँच मिनटों पर पूरी सावधानी से ध्यान देते हैं।

टीचिंग में भी, शानदार लेसन वे होते हैं जो लेसन की शुरुआत में ही टीचर का उत्साह विद्यार्थियों के मन में जगा देते हैं। इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि लेसन सौर मंडल पर है या व्यक्तिगत स्वच्छता पर, अच्छा टीचर जानता है कि विद्यार्थियों को कैसे प्रेरित करना है। कोई भी टॉपिक अपने-आप में बोरिंग नहीं होता है। बात बस उसमें उत्साहजनक बिंदु ढूँढने की है।

'हुक' ही क्यों?

- हम तेज़ी से दौड़ती-भागती दुनिया में जी रहे हैं जहाँ ध्यान बँटाने वाली चीज़ों की कोई कमी नहीं है। विद्यार्थियों का ध्यान खींचना ज़रुरी है। इससे विद्यार्थियों को **एंगेज** होने में मदद मिलेगी।
- इससे मौजूदा ज्ञान के साथ कनेक्शन बनेगा और इसका इस्तेमाल कुछ मटीरियल को खास बनाने के लिए किया जा सकता है जिससे विद्यार्थी और आसानी से चीज़ें याद्दाश्त से याद कर पाएँगे। इससे विद्यार्थी टॉपिक के बारे में अपने विचार और आइडिया शेयर करने में **सुरक्षित** महसूस करेंगे। जब कोई विद्यार्थी किसी टॉपिक के बारे में आत्मविश्वास महसूस करता है, तो वह सीखने की दिशा में अपनी इच्छा से कदम बढ़ाता है।
- इससे एक प्रभावी सीढ़ी की रचना होती है - सही दिशा में छोटे-छोटे कदम बढ़ाना और विद्यार्थियों को उस दिन का कंटेंट समझने के लिए तैयार करना। ऐसे छोटे-छोटे कदमों से विद्यार्थियों को अक्सर कार्यों में आत्मविश्वास के साथ हिस्सा लेने में मदद मिलती है और उनका **सेल्फ़-एस्टीम** बढ़ता है।

'हुक' को प्रभावी ढंग से कैसे लागू करें:

- इसे संक्षिप्त होना चाहिए। यह छोटा और फुर्तीला परिचय होता है, इसे घसीटना नहीं चाहिए।
- इसे पढ़ाए जा रहे लेसन से (प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप से) जुड़े होना चाहिए।
- इस परिचय से उस दिन के लेसन पर जाने की राह आसान होनी चाहिए।
- इसे एनर्जी से भरा और पॉज़िटिव होना चाहिए और इससे टॉपिक के मज़ेदार हिस्से सामने आने चाहिए न कि वे जो मुश्किल या पेचीदा हैं।

हुक बनाम डू नाउ

डू नाउ एक छोटी, 5-7 मिनट वाली गतिविधि होती है जो विद्यार्थी लेसन की शुरुआत में स्वतंत्र रुप से करते हैं और इस दौरान टीचर बैठकर कक्षा के लिए तैयार होता है। यह कंटेंट से जुड़ी हो सकती है या यह कोई गैर-अकादमिक कार्य हो सकता है ।

वहीं दूसरी ओर, हुक एक छोटा और आकर्षक परिचय होता है जो विद्यार्थियों को लेसन की गहराई में जाने हेतु उत्साहित करने के लिए होता है। यह हमेशा ही उस दिन के लिए प्लान किए गए टॉपिक/अवधारणा से जुड़ा होता है।

मॉडल उदाहरण

उमा को कक्षा VII के अपने विद्यार्थियों को पढ़ाना अच्छा लगता है। उनके सामने जो बड़ी चुनौतियां हैं वे हैं विद्यार्थियों की लेसन में रुचि जगाना, उनमें संकोच घटाना, और उनके लिए सीखने का एक सुरक्षित माहौल बनाना। इन पर खोजबीन करते समय उन्हें "हुक" दिनचर्या का पता चला। उन्होंने अपनी कक्षा में इसे आज़माने का संकल्प लिया।

अगले दिन उन्हें राशियों की तुलना की अवधारणा पढ़ानी थी। उन्होंने अपने विद्यार्थियों का स्वागत किया और बताया कि वे कक्षा की शुरुआत एक कहानी से करेंगी। इससे विद्यार्थियों का ध्यान उनकी ओर खिंच गया और वे आतुरता से कहानी सुनने लगे। उन्होंने कहा, *यह कहानी तरुणा और अरुणा नामक दो सगी बहनों और उनकी दादी की है। हर शाम स्कूल से घर लौटने के बाद वे मेज़ पर बैठ जातीं और उनकी दादी उन्हें कोई स्नैक देती थीं। पर आम तौर पर तरुणा और अरुणा में स्नैक पर लड़ाई हुआ करती थी। पिछले हफ़्ते जब दादी ने 15 पकौड़े बनाए, तो तरुणा को 9 पकौड़े मिले पर अरुणा को केवल 6 मिले। तरुणा को अरुणा से 3/2 गुना पकौड़े मिले, और अरुणा को तरुणा को मिले पकौड़ों का ⅔ भाग मिला।* (उन्होंने बोर्ड पर तुलना लिखी और समझाया कि इसे कैसे किया जाता है)। *कल दादी ने 24 पकौड़े बनाए और उन्हें मेज़ पर रख दिया। तरुणा ने फुर्ती दिखाते हुए 15 पकौड़े ले लिए जबकि अरुणा को 9 पकौड़े मिले।*

उमा ने विद्यार्थियों से कहा कि वे जोड़ियों में दो मिनट तक चर्चा करें और लिखें:

a) *तरुणा को अरुणा से ______ गुना पकौड़े मिले।*
b) *अरुणा को तरुणा को मिले पकौड़ों का ______ भाग मिला।*

उमा ने इसे बोर्ड पर लिख दिया और कक्षा में चक्कर लगाया। जब विद्यार्थी गतिविधि को हल करने की कोशिश कर रहे थे तो वे उनकी कोशिशों की तारीफ़ करती रहीं। उन्होंने देखा कि उनके विद्यार्थी अलग-अलग हल दे रहे थे**।** अगर विद्यार्थी सही

हल नहीं दे पा रहे थे या कहीं अटक रहे थे, तो उन्होंने उनसे प्रोबिंग सवाल पूछे और उन्हें गतिविधि के बारे में सोचने का एक और मौका दिया। उन्होंने जोड़ीदारों के बीच की बातचीत को भी बढ़ावा दिया।

इसके बाद उन्होंने विद्यार्थियों का ध्यान अपनी ओर खींचा और कुछ विद्यार्थियों से उनके हल बताने को कहा। उनके जवाबों का इस्तेमाल करते हुए उन्होंने राशियों की तुलना नामक टॉपिक समझाया। इसके बाद वे अपने बाकी के लेसन प्लान पर गईं और विद्यार्थियों से समतुल्य अनुपातों के बारे में चिंतन करवाया।

उमा बहुत उत्साहित थीं। उन्हें महसूस हुआ कि शुरुआत में सुनाई गई वह पाँच मिनट की कहानी ही उनके विद्यार्थियों को लेसन से हुक करने की कुंजी थी। उन्होंने कक्षा VI में भी राशियों की तुलना के बारे में पढ़ा था और यह गतिविधि एक फटाफट दोहराव की गतिविधि भी बन गई। अब उमा हर लेसन में एक हुक रखने की योजना बनाती हैं। उन्होंने यह नहीं सोचा कि उनके विद्यार्थियों को सीखने में रुचि नहीं है, बल्कि उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि मायने यह रखता है कि वे उनके मन में उत्साह कितनी अच्छी तरह जगा सकती हैं। उन्होंने जाना कि उनका हुक संक्षिप्त होना चाहिए, उसे घसीटना नहीं चाहिए या उससे विद्यार्थियों का ध्यान नहीं बँटना चाहिए। आज 'हुक' उमा की कक्षा में एक नियमित दिनचर्या बन चुका है और उनके विद्यार्थियों को हर लेसन का बेसब्री से इंतजार रहता है।

मॉडल उदाहरण पढ़ने के बाद इन सवालों के बारे में सोचें।

1. सुश्री उमा ने लेसन में रुचि कैसे जगाई?
2. हुक दिनचर्या ने सुश्री उमा की कक्षा में सुरक्षा, जुड़ाव एवं आत्म सम्मान को किस तरह बढ़ावा दिया? *संकेत: सुरक्षा, जुड़ाव एवं आत्म सम्मान के कामयाबी के मापदंड के आधार पर चर्चा करें।*

योजना बनाना

अब आप यह योजना बना सकते हैं कि अपनी कक्षा में आप 'हुक' का उपयोग कैसे करेंगे। ऐसा कोई लेसन सोचें जो आपको अगले एक या दो हफ़्तों में पढ़ाना है। और फिर नीचे वाली टेबल में दिए गए मापदंड को ध्यान में रखते हुए हुक की योजना बनाएँ।

विषय: ……………………………………………………………

लेसन का नाम: ……………………………………………………………

हुक का माध्यम: ……………………………………… (कहानी / उपमा / मीडिया / पहेली / सच्ची घटना / अन्य)

उसकी योजना बनाएँ/स्क्रिप्ट लिखें:

कामयाबी के मापदंड :

क्षेत्र	**विशिष्ट विवरण**	**नोट** *(आपका पार्टनर जो फ़ीडबैक दे उसे नीचे दी गई जगह में लिखें)*
विद्यार्थी एंगेजमेंट	क्या हुक विद्यार्थियों में रुचि जगाने में कामयाब रहा? क्या विद्यार्थी ज़्यादा एंगेज हो रहे हैं?	
लेसन से जुड़ाव	क्या हुक से लेसन पर जाने की राह आसान है? क्या वह लेसन से संबंधित है, और क्या वह विद्यार्थियों को लेसन में एंगेज करता है?	
रचनाशील	क्या हुक रोचक और रचनाशील है? क्या यह विद्यार्थियों को आश्चर्यचकित करता है या उन्हें यह बार-बार होने वाली चीज़ लगता है?	
समय	क्या हुक संक्षिप्त है? क्या वह संक्षिप्त और आकर्षक है जो आपमें उत्सुकता और रुचि जगाता है? या फिर यह घिसटता हुआ महसूस होता है?	

अभ्यास और फ़ीडबैक

समूहों में बंट जाएँ और एक हुक गतिविधि बनाएँ। उसे दूसरों से शेयर करें फ़ीडबैक लें।

चरण 1	पहला समूह वह लेसन शेयर करेगा जो उसने चुना है। इसके बाद, वे उस लेसन विशेष के लिए हुक बनाने का अभ्यास करेंगे।
चरण 2	दूसरे समूहों को उनका हुक पेश करते हुए देखें। ऊपर बताए गए कामयाबी के मापदंड का इस्तेमाल करते हुए फ़ीडबैक दें; इस आधार पर भी फ़ीडबैक दें कि इससे कक्षा में सुरक्षा, जुड़ाव एवं आत्म सम्मान को किस प्रकार बढ़ावा मिलेगा।

सुश्री उमा ने अपनी गणित की कक्षा के लिए हुक दिनचर्या इस्तेमाल की थी। हम दूसरे विषयों की कक्षाओं के लिए भी हुक दिनचर्या इस्तेमाल कर सकते हैं। जैसे, विज्ञान की कोई अवधारणा पेश करने से पहले किसी उपमा या समानता का उपयोग किया जा सकता है; भाषा की कक्षा में कहानी पढ़ने से पहले कहानी के चरित्रों पर आधारित कोई पहेली पूछी जा सकती है, और सामाजिक विज्ञान की कक्षा में किसी समाचार पर चर्चा हुक गतिविधि बन सकती है। विभिन्न प्रकार की हुक गतिविधियों के लिए संलग्नक 1 (Annexure 1) देखें।

सुरक्षा, जुड़ाव और आत्म-सम्मान के लिए प्रभावी प्रथाओं का भंडार बनाना

एलआईसी 11 के आधार पर, शिक्षकों ने अपनी कक्षा में सुरक्षा, संलग्नता और आत्म-सम्मान सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न रणनीतियों और प्रथाओं को नियोजित किया होगा। आप अपने विद्यालय के शिक्षकों को इन प्रभावी अभ्यासों का एक भंडार गृह बनाने के लिए कैसे प्रोत्साहित कर सकते हैं ताकि वे सभी एक दूसरे की रणनीतियों का उपयोग अपनी कक्षा में कर पाएं?

सहकर्मी कक्षा अवलोकन

LIC 11 में हमने सहकर्मी अवलोकन के बारे में विस्तार से बात की थी। क्या अब आप, अपने अनुभव के आधार पर, इस बारे में अपने विचार गढ़ सकते हैं कि *कक्षा अवलोकन का क्या उद्देश्य है और कक्षा अवलोकन का क्या उद्देश्य नहीं है?*

कक्षा अवलोकन को अक्सर आसानी से स्वीकार नहीं किया जाता है क्योंकि जिसका अवलोकन किया जा रहा है उसे यह डर होता है कि उसे इन अवलोकन से आँका जाएगा, और इनसे टीचर को अपने तौर-तरीकों पर विचार करने के लिए सुरक्षित और रचनाशील स्थान नहीं मिलता है। जब इन अवलोकन का उद्देश्य टीचर की कक्षा के बारे में व्यक्तिपरक राय देना न होकर एक-दूसरे की मदद करना और एक-दूसरे से सीखना होता है तो तब ये अवलोकन अधिक पॉज़िटिव ढंग से स्वीकार किए जाते हैं।

अगले अनुभाग में हम इस बात पर चर्चा करेंगे कि अवलोकन के लिए किसी कक्षा में बैठे होने पर प्रेक्षक को किन बातों पर फ़ोकस करना चाहिए। आगे बढ़ने से पहले आइए हम दो-तीन मिनट निकालकर इस सवाल पर विचार करें।

कक्षा अवलोकन करते समय आप किन चीज़ों पर फ़ोकस करते हैं?

क्या आप आपके जवाबों को विभिन्न श्रेणियों में रखने का कोई तरीका सोच सकते हैं?

क्या आपके जवाब इन श्रेणियों में आते हैं?

टीचिंग-लर्निंग प्रक्रिया

टीचर और विद्यार्थी के बीच संवाद

मूल्यांकन

मुख्य फ़ोकस क्षेत्र: संसाधन

कृपया नीचे दी गई टेबल देखें। इसमें वे मुख्य फ़ोकस क्षेत्र बताए गए हैं जिन्हें आप किसी कक्षा का अवलोकन करते समय इस्तेमाल कर सकते हैं । हर फ़ोकस क्षेत्र के कुछ मार्गदर्शक सवाल हैं जो प्रेक्षक को मदद देते हैं। ध्यान दें कि यह कोई पूरी सूची नहीं है और हम आपको प्रेरित करते हैं कि आप इसी टेबल में और मार्गदर्शक सवाल जोड़ें।

फ़ोकस क्षेत्र	मार्गदर्शक सवाल	गुणात्मक कमेंट
टीचिंग-लर्निंग प्रक्रिया	• क्या सभी विद्यार्थी सामूहिक/समकक्ष कार्यों में एंगेज हैं? • क्या सभी विद्यार्थी टॉपिक को अपने असल जीवन से कनेक्ट करके, उसे पहले सीखी गई किसी चीज़ से जोड़कर, या टॉपिक के बारे में सवाल पूछकर, टॉपिक से संबंधित चर्चाओं में हिस्सा ले पा रहे हैं? • क्या सभी विद्यार्थी निर्देशों का पालन कर पा रहे हैं? • क्या टीचिंग-लर्निंग की विधि परस्पर संवादपूर्ण है? • क्या सभी विद्यार्थी एक-दूसरे से संवाद कर पा रहे हैं? • क्या जब-जब ज़रुरत हो तब-तब कक्षा में सभी TLM का इस्तेमाल हो रहा है? • क्या अंत में टॉपिक/लेसन का सारांश बताया गया? • क्या सभी विद्यार्थी कार्य करने की कोशिश कर रहे हैं?	
टीचर- विद्यार्थी के बीच संवाद	• क्या सभी विद्यार्थी टीचर से सवाल पूछ रहे हैं? • क्य सभी विद्यार्थियों को टीचर से उनके सवालों के जवाब मिल रहे हैं? • क्या सभी विद्यार्थी कार्य पर ध्यान दे रहे हैं? • क्या टीचर विद्यार्थियों को उनके नाम से संबोधित करते हैं? • क्या टीचर और विद्यार्थियों के बीच सम्मानपूर्ण संवाद होता है (टीचर विद्यार्थियों का मज़ाक नहीं उड़ाते हैं, उन पर चिल्लाते नहीं हैं, या उन पर गलत कमेंट नहीं करते हैं)? • क्या गलतियाँ करने के बावजूद सभी विद्यार्थियों की कोशिशों की सराहना की जाती है? • क्या सभी विद्यार्थी टीचर से मदद/समर्थन माँग रहे हैं?	
मूल्यांकन	• क्या सभी विद्यार्थी लेसन के दौरान अपनी समझ का प्रदर्शन कर रहे हैं? (उद्धारहण . स्वतंत्र रुप से समस्याएँ/सवाल हल करना, पूरी कक्षा में अपने आइडिया/विचार ज़ोर-ज़ोर से बोलकर शेयर करना, टीचर/सहपाठियों द्वारा रखे गए सवालों के जवाब देना) • क्या लेसन के दौरान नियमित अंतराल पर सभी विद्यार्थियों की समझ को जाँचा जाता है? • क्या सभी विद्यार्थियों की लेसन की समझ का सकल मूल्यांकन किया जाता है (अगर लागू हो)?	

क्या आप ऊपर बताए गए मार्गदर्शक सवालों में से वे सवाल अलग कर सकते हैं जो कक्षा में सुरक्षा, जुड़ाव एवं आत्म सम्मान होने का संकेत देते हैं? **अपने सहकर्मियों से इस बारे में बात करें।**

चेकलिस्ट - सुरक्षा, जुड़ाव एवं आत्म सम्मान

सुरक्षा	• क्या टीचर विद्यार्थियों को उनके नामों से संबोधित करते हैं? • क्या टीचर और विद्यार्थियों के बीच सम्मानपूर्ण संवाद होता है (टीचर विद्यार्थियों का मज़ाक नहीं उड़ाते हैं, उन पर चिल्लाते नहीं हैं, या उन पर गलत कमेंट नहीं करते हैं)? • क्या गलतियाँ करने के बावजूद सभी विद्यार्थियों की कोशिशों की सराहना की जाती है?
एंगेजमेंट	• क्या सभी विद्यार्थी सामूहिक/समकक्ष कार्यों में एंगेज हैं? • क्या सभी विद्यार्थी टॉपिक को अपने असल जीवन से कनेक्ट करके, उसे पहले सीखी गई किसी चीज़ से जोड़कर, या टॉपिक के बारे में सवाल पूछकर, टॉपिक से संबंधित चर्चाओं में हिस्सा ले पा रहे हैं? • क्या सभी विद्यार्थी निर्देशों का पालन कर पा रहे हैं? • क्या सभी विद्यार्थी टीचर से सवाल पूछ रहे हैं?
सेल्फ एस्टीम	• क्या सभी विद्यार्थी लेसन के दौरान अपनी समझ का प्रदर्शन कर रहे हैं? (उदा. स्वतंत्र रूप से समस्याएँ/सवाल हल करना, पूरी कक्षा में अपने आइडिया/विचार ज़ोर-ज़ोर से बोलकर शेयर करना, टीचर/सहपाठियों द्वारा रखे गए सवालों के जवाब देना) • क्या सभी विद्यार्थी टीचर से मदद/समर्थन माँग रहे हैं? • क्या सभी विद्यार्थी कार्य करने की कोशिश कर रहे हैं?

कक्षा में पढ़ाने के तौर-तरीकों पर खुद विचार/का खुद अवलोकन (SELF-REFLECTION /SELF OBSERVATION OF CLASSROOM PRACTICE)

पिछले LIC में हमने इस बारे में बात की थी कि सहकर्मी कक्षा अवलोकन किस प्रकार टीचिंग-लर्निंग के तौर-तरीकों को बेहतर बनाने का एक ताकतवर और मददगार टूल है। एक और तरीका यह है कि अपने टीचिंग के तौर-तरीकों पर विचार करने के लिए खुद की कक्षा का खुद अवलोकन या उस पर खुद विचार किया जाए। खुद का अवलोकन करने में, जिस भी साधन से संभव हो उस साधन से अपनी कक्षा को व्यवस्थित ढंग से रिकॉर्ड करना और क्या चीज़ें कामयाब रहीं और क्या नाकामयाब रहीं इस बारे में सोचना शामिल है। कभी-कभी कक्षा सत्र को व्यवस्थित ढंग से रिकॉर्ड करना संभव नहीं भी हो सकता है। ऐसे में कक्षा के बाद खुद विचार किया जा सकता है। खुद विचार करना या खुद अवलोकन करना सोच-विचारी अभ्यास में एंगेज होने का एक प्रभावी तरीका है और यह सहकर्मियों से सोच-विचारी चर्चा करने का आरंभ बिंदु भी है। पर हम खुद अवलोकन / खुद विचार कैसे कर सकते हैं? हम इन आसान चरणों का पालन कर सकते हैं:

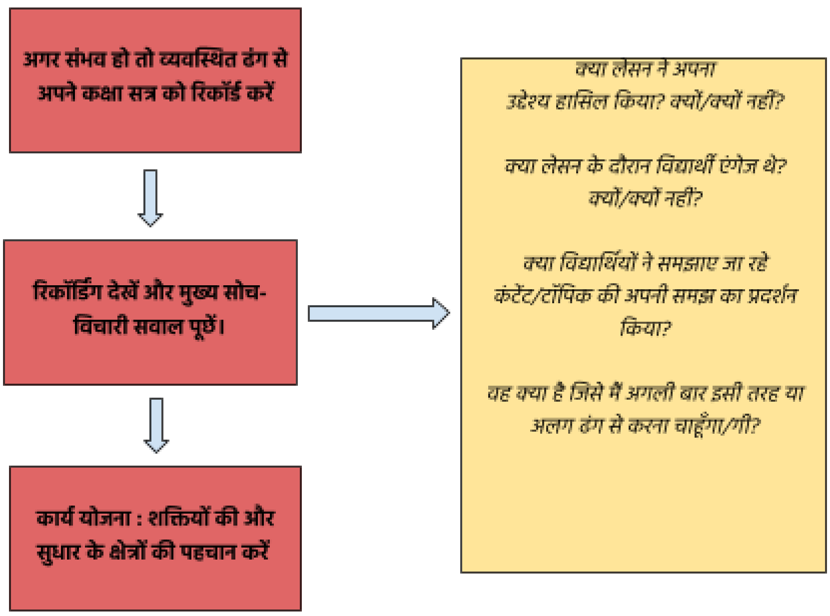

खुद अवलोकन करने/खुद विचार करने के उद्देश्य के अनुसार सोचने-विचारने के मुख्य सवाल अलग-अलग हो सकते हैं। आपको जिन क्षेत्रों में सुधार करना है उनके अनुसार इन सवालों को ढाला जा सकता है। जैसे, अगर आपको विद्यार्थियों की कम सहभागिता की समस्या हो रही है, तो आपके सोच-विचार के मुख्य सवाल वे हो सकते हैं जो कक्षा में विद्यार्थियों की सहभागिता पर खास तौर से फ़ोकस करते हों।

सहकर्मी कक्षा अवलोकन के बाद अच्छा फ़ीडबैक कैसे दें?

फ़ीडबैक ऐसा होना चाहिए

- **विशिष्ट (स्पेसिफ़िक)**
- जिसमें **सोच-विचार** की गुंज़ाइश हो
- **जो विद्यार्थी क्या कर रहे हैं इस बात पर और कक्षा की प्रक्रियाओं पर फ़ोकस करता हो**, न कि टीचर पर
- जो कोई **कार्य योजना** सुझाता हो

आइए ऐसे कुछ तरीकों पर नज़र डालें जिनकी मदद से इस फ़ीडबैक को ज़्यादा **स्पेसिफ़िक, सकारातमक , सोच-विचारपूर्ण, और कार्य उन्मुख** बनाया जा सकता है

यह प्रभावी फ़ीडबैक नहीं है	**यह प्रभावी फ़ीडबैक है**
आपको कक्षा को और रोचक बनाना होगा!	आज कक्षा में जो सामूहिक गतिविधियाँ की गईं वे मुझे सच में अच्छी लगीं! मैंने देखा कि सामूहिक कार्य के दौरान कुछ विद्यार्थी एंगेज नहीं थे। क्या आपने पहले कभी इसका सामना किया है? आपके विचार में इसके संभावित कारण क्या हैं? क्या हम समूह के हर मेंबर को उप-कार्य सौंपने में विद्यार्थियों की मदद कर सकते हैं? मैंने कई मामलों में इसके फायदे देखें है।
कक्षा बहुत अच्छी थी। आपने लेसन बहुत अच्छे से संचालित किया	आज के सत्र में विद्यार्थियों ने सामूहिक गतिविधि में सक्रिय ढंग से हिस्सा लिया और वे निर्देशों का साफ़-साफ़ पालन कर पा रहे थे। यह देखना प्रेरणादायी था कि विद्यार्थी जब भी खुद को अटका हुआ महसूस कर रहे थे तब वे बिना किसी संकोच के स्पष्टीकरण के सवाल पूछ रहे थे।

आपने समझ के सवाल पूछकर नहीं देखे। जिस अवधारणा पर बात की जा रही थी, विद्यार्थी उसे समझ नहीं पा रहे थे।	हो सकता है कि कुछ विद्यार्थियों ने "क्या आपको समझ आ गया?", इस सवाल पर प्रतिक्रिया न दी हो। मैं सोच रहा था/रही थी कि क्या हम विद्यार्थियों से ये कहें कि वे अपनी अंगुलियों के संकेत द्वारा दिखाएँ कि टॉपिक/अवधारणा की अपनी समझ पर उन्हें कितना विश्वास है, ताकि हमें विद्यार्थियों की समझ के स्तर के बारे में और स्पष्टता मिल जाए? क्या हम साथ मिलकर कुछ और आइडिया सोच सकते हैं?

विचार करें

1. क्या आपको लगता है कि प्रमुख फोकस क्षेत्र संसाधन उपयोगी है?
2. आप यह सुनिश्चित करने के लिए क्या कर सकते हैं कि एआरटी सदस्य इसका प्रभावी ढंग से उपयोग कर रहे हैं?
3. अपने विद्यालय में सेल्फ -रिफ्लेक्शन/ कक्षाकक्ष अभ्यास के आत्म-अवलोकन की संस्कृति का निर्माण करने के लिए आप कौन से 2 प्रमुख कदम उठा सकते हैं?
4. सेल्फ -रिफ्लेक्शन/ कक्षाकक्ष अभ्यास के आत्म-अवलोकन को करने में शिक्षकों को किन चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है? एआरटी बैठकों के दौरान इन्हें कैसे संबोधित किया जा सकता है?

अपने साथियों के साथ चर्चा करें

सोच-विचारी चर्चाएँ *(कोचिंग)* *(Reflctive Discussions)*

श्रुति मैम ने कक्षा दस के अपने विद्यार्थियों के लिए त्रिकोणमिति का एक लेसन प्लान किया। लेसन जैसा प्लान किया था वैसा नहीं हुआ। उन्होंने जिस वर्कशीट की योजना बनाई थी वे उसे पूरा नहीं कर पाईं और कई विद्यार्थी सामूहिक कार्य के दौरान योगदान नहीं दे सके। कक्षा से निकलकर वे स्टाफ़रुम गईं और वहाँ उन्होंने कुछ समय तक अपनी त्रिकोणमिति की कक्षा के बारे में सोचा। उन्होंने सोचा कि वे सामूहिक कार्य की अवधि घटा देंगी और अलग-अलग प्रकार की वर्कशीट रखेंगी ताकि हर कोई वर्कशीट हल करने की कोशिश कर पाए। अपनी अगली कक्षा में वे जिन चीज़ों में बदलाव करना चाहती थीं उन्होंने उन चीज़ों की एक चेकलिस्ट बनाई और उसी के अनुसार अगले दिन के लेसन प्लान में बदलाव किया।

श्रुति मैडम अपने अपनी पाठ योजना और उसकी प्रस्तुति के बारे में सोच-विचार कर रही हैं। हम अक्सर 'सोच-विचार' या 'चिंतन' शब्द के बारे में और टीचिंग अभ्यास में सुधार के मामले में इसके महत्व के बारे में बात करते हैं, पर **सोच-विचार या सोच-विचारी अभ्यास आखिर क्या है**? David Schon के अनुसार, "सोच-विचारी अभ्यास' का मतलब निरंतर लर्निंग और विकास के उद्देश्य से व्यक्ति की अपनी खुद की क्रियाओं पर सोचने-विचारने की योग्यता से है।" टीचिंग के संदर्भ में, सोच-विचार या चिंतन, व्यक्ति के टीचिंग अभ्यास को बेहतर बनाने और उसकी पद्धति में बदलाव लाने का एक माध्यम है। पहली LIC में जॉन ड्यूई के इस प्रसिद्ध उद्धरण पर बात की थी कि *"हम अनुभव से नहीं सीखते हैं। हम हमारे अनुभव पर हमारे सोच-विचार से सीखते हैं।* पिछले अनुभाग में हमने सोच-विचारी अभ्यास में एंगेज होने के एक तरीके के रूप में खुद विचार या खुद कक्षा अवलोकन करने पर बात की थी।

सोच-विचार महत्वपूर्ण क्यों है? • लगातार अपनी क्रियाओं और अनुभवों पर नज़र डालते रहने से आप सुधार और विकास कर पाते हैं • आप यह देख पाते हैं कि आप कहाँ और कैसे कामयाब हुए हैं जिससे आप अपने कार्य पर अधिक गर्व कर पाते हैं और अपनी अंदरुनी प्रेरणा बढ़ा पाते हैं।

तो, श्रुति मैम ने अपने कक्षा अनुभव के बारे में सोच-विचार करते समय क्या सोचा होगा?

मैंने क्या किया?

क्या चीज़ें कामयाब हुईं?

क्या चीज़ें कामयाब नहीं हुईं?

अगली बार सुधार के लिए मैं क्या करूँगी?

ईमानदार रहें पर खुद पर ज्यादा कठोर न हों

ऊपर वाले उदाहरण में श्रुति मैडम ने अकेले सोच-विचार किया। श्रुति मैम और क्या कर सकती थीं? क्या सोच-विचार का और कोई तरीका भी है? **हाँ, सहकर्मियों के साथ सहयोगपूर्ण ढंग से सोच-विचारी चर्चा करना, कक्षा अभ्यास को मज़बूती देने का एक और तरीका है। इससे हमें हमारे सहकर्मियों के साथ हुई चर्चाओं और उनसे मिली मदद के आधार पर हमारी पद्धति पर नए सिरे से सोचने या उसमें बदलाव करने में मदद मिलती है।**

आइए, वृंदा मैम और अभिषेक सर के बीच हुई एक सोच-विचारी चर्चा का मॉडल उदाहरण देखें।

वृंदा मैम (V) और अभिषेक सर (A) वृंदा मैम द्वारा किए गए समकक्ष कक्षा अवलोकन के बाद एक सोच-विचारी चर्चा कर रहे हैं।

V: सर आपने मुझे अपनी कक्षा में बैठने दिया इसके लिए धन्यवाद। चलिए आपकी आज की कक्षा के बारे में कुछ समय के लिए सोच-विचार करते हैं। क्या मैं आपको आज के सत्र के बारे में कुछ बता सकती हूँ?

A: वृंदा जी, मेरी कक्षा में आने के लिए आपने समय निकाला इसके लिए आपको धन्यवाद। आज का सत्र पुनरावृति सत्र था। इसलिए मैंने एक सामूहिक गतिविधि संचालित की थी। पर मुझे लगा कि विद्यार्थियों से टॉपिक का अलग-अलग

रिवीज़न करवाना भी ज़रूरी था।

V: हम्म...। सबसे पहले तो मैं आपको बधाई देना चाहूँगी। आज के सत्र में विद्यार्थियों ने सामूहिक गतिविधि में सक्रिय ढंग से हिस्सा लिया और वे निर्देशों का साफ़-साफ़ पालन कर पा रहे थे। यह देखना प्रेरणादायी था कि विद्यार्थी जब भी खुद को अटका हुआ महसूस कर रहे थे तब वे बिना किसी संकोच के स्पष्टीकरण के सवाल पूछ रहे थे। आपको विद्यार्थियों से अलग-अलग पुनरावृति करवाना ज़रूरी क्यों लगता है?

A: असल में, जो विद्यार्थी संकोची नहीं हैं वे ही गतिविधि का नेतृत्व कर रहे थे, और मैंने देखा कि वैसे तो सभी विद्यार्थी हिस्सा ले रहे थे पर कुछ विद्यार्थी ऐसे थे जो ज़्यादा एंगेज नहीं थे। मुझे पता है कि इनमें से कुछ विद्यार्थियों को पिछली बार अवधारणा को समझने में मुश्किल हो रही थी।

V: ओह, मैं समझ गई। आपकी चिंता पूरी तरह उचित है। क्या आपको लगता है कि सामूहिक पुनरावृति गतिविधि और अलग-अलग वर्कशीट को जोड़ देने से मदद मिलती? मैंने विज्ञान के मेरे एक सत्र में इसे आज़माया था। वर्कशीट चेक करने के बाद मुझे पता चल गया था कि किन विद्यार्थियों को अभी-भी टॉपिक को समझने में मदद की ज़रूरत है।

A: हाँ, हाँ। मैं अगले सत्र में इसे करने की कोशिश करूँगा। असल में, मैं आज ही एक वर्कशीट बना लूँगा, और कल सत्र शुरु होने से पहले, मैं पुनर्कथन (recap) गतिविधि के रुप में उसका इस्तेमाल करूँगा। और हाँ, जब आपने कहा कि विद्यार्थी स्पष्टीकरण वाले सवाल पूछ रहे थे तो यह जानकर मुझे थोड़ी राहत मिली। असल में कक्षा में बहुत से विद्यार्थी सवाल पूछने से डरते हैं क्योंकि उन्हें डर है कि उन्हें आँका जाएगा या वे अच्छे सवाल नहीं पूछ पाएंगे । हर कोई अपनी बात कह सके इसके लिए मुझे सभी को समझाना पड़ा कि बुनियादी सवाल पूछने में कोई बुराई नहीं है। पर अभी-भी बहुत काम बाकी है।

V: ओह... आज मैंने कई विद्यार्थियों को आपके पास आते देखा। मेरे विचार से, धीरे-धीरे ही सही, उनमें यह आदत पड़ जाएगी। मेरे विचार से बच्चे सही दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। सर, सवाल पूछने की आदत को बढ़ावा देने और इस संकोच को और घटाने के लिए आपने और किन चीज़ों को करने की सोची है?

A: मैं सोच रहा था कि मैं कुछ कक्षा दिनचर्याएँ बना दूँ जिससे विद्यार्थी एक-दूसरे की मदद करें और एक-दूसरे की बात सुनें। जैसे buddy system , ताकि विद्यार्थी एक-दूसरे का मजाक कम उड़ाए और समस्याएं सुलझाने व सीखने-सिखाने

में एक-दूसरे की मदद ज़्यादा करें। इसकी योजना बनाने में मुझे आपकी मदद चाहिए होगी।

मॉडल उदाहरण पढ़ने के बाद इन सवालों के जवाब दें।

1. प्रभावी सोच-विचारी चर्चा को बढ़ावा देने के लिए वृंदा ने क्या किया?
2. और अधिक प्रभावी सोच-विचारी चर्चा को बढ़ावा देने के लिए वृंदा क्या चीज़ अलग ढंग से कर सकती थीं?
3. आपके अनुसार, सहकर्मियों से सोच-विचारी चर्चा करने के ज़रूरी पहलू क्या हैं?

प्रभावी सोच-विचारी चर्चा कैसे की जाए? कामयाबी के मापदंड

- दूसरों को अनुमान के आधार पर न आँकें
- टीचरों के अनुभव को स्वीकारें
- टटोलने वाले सवाल पूछें
- टीचर के जवाबों का विश्लेषण करें
- सुझाव दें। आदेश नहीं
- कार्य योजना बनाने में मदद दें

विचार करें

किसी ऐसे मुद्दे के बारे में सोचें जिसे आप अपने शिक्षकों के बीच हल करना चाहते हैं। आप इस मुद्दे पर गहन और सहयोगात्मक रूप से विचार करने के लिए चिंतनशील चर्चाओं का उपयोग कैसे करेंगे?

अपने साथियों के साथ चर्चा करें और प्रतिक्रिया प्राप्त करें।

निम्नलिखित प्रश्नों के बारे में सोचें

1. आप बातचीत कैसे शुरू करेंगे?
2. आपको समस्या के बारे में अधिक जानकारी कैसे मिलेगी?
3. आप यह कैसे सुनिश्चित करेंगे कि शिक्षक मुद्दे पर चर्चा करते समय चिंतन की प्रक्रिया में शामिल हों?

शिक्षा में सोशल मीडिया: सहकर्मियों से सीखना और प्रभावी तौर-तरीके शेयर करना

सोशल मीडिया और उसका इस्तेमाल हमारे जीवन का अलग न हो सकने वाला हिस्सा बन चुके हैं। हम हमारे निजी और पेशेवर जीवन में तरह-तरह के सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म का काफ़ी इस्तेमाल करते हैं। हम इंसान हैं और इस नाते हममें

लोगों से मिलने-जुलने की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। शायद यही कारण है जिसके चलते हमारे पेशेवर और निजी जीवन में सोशल मीडिया का इस्तेमाल इतना बढ़ गया है। हम लोगों से मिलने-जुलने की इस सहज प्रवृत्ति का इस्तेमाल, सहकर्मियों की लर्निंग कम्युनिटी बनाने और प्रभावी तौर-तरीके शेयर करने के लिए किस तरह कर सकते हैं? हमने LIC 6 में इस पर बात की थी। 'Making it Social' रणनीति का लक्ष्य हमारे स्कूलों में कार्य करने की अच्छी आदतें बनाने में हमारी मदद करना था। चूँकि हम लगातार हमारे कार्यस्थलों में नवाचार कर रहे हैं और नई-नई चीज़ें आज़मा रहे हैं, अतः हम हमारे स्कूलों में हमारे सहकर्मियों के साथ ये प्रभावी तौर-तरीके शेयर कर सकते हैं। सोशल मीडिया एक ऐसा प्लेटफ़ॉर्म है जो हमें इन तौर-तरीकों और विचारों को हमारे स्कूल से भी परे टीचर्स की ऑनलाइन कम्यूनिटी तक ले जाने में मदद दे सकता है। सोशल मीडिया की बदौलत बने नेटवर्कों की ताकत का इस्तेमाल करते हुए, सहकर्मियों से सीखने और शेयर करने की एक ऐसी संस्कृति की रचना की जा सकती है जो भौगोलिक सीमाओं से परे हो। आइए सुश्री रेखा के इस उदाहरण पर एक नज़र डालें।

सुश्री रेखा कक्षा 9 के विद्यार्थियों को गणित पढ़ाती हैं। उन्होंने पिछले साल एक यूट्यूब चैनल शुरू किया जिस पर वे उन टीचिंग-लर्निंग रणनीतियों के वीडियो डालती हैं जिनका इस्तेमाल वे अपनी कक्षा में करती हैं। सुश्री रेखा ने ट्विटर पर भी बहुत सारे यूज़रर्स से अपनी रणनीतियाँ शेयर की हैं। उनकी कुछ ट्विटर पोस्ट ने भारत और दुनिया भर के गणित के टीचर्स का ध्यान खींचा है और उनकी तारीफ़ें पाई हैं। शेयर करने, री-शेयर होने, ट्वीट करने और बार-बार री-ट्वीट किए जाने के ज़रिए उनकी रणनीतियाँ दूर-दूर तक पहुँच गई हैं। कुछ दूसरे टीचर्स ने उनकी रणनीति को अपनाया और अपने अनुभव ट्वीट करके बताए। अब वे ट्विटर और फ़ेसबुक पर गणित के टीचर्स की कुछ कम्यूनिटी का हिस्सा हैं। सुश्री रेखा अब इन समूहों द्वारा आयोजित वर्चुअल मीटिंग और सेमिनार में नियमित रुप से हिस्सा लेती हैं जहाँ सभी मेंबर गणित के शिक्षण से जुड़े अहम मुद्दों पर बात करते हैं। वे इन प्लेटफ़ॉर्म का इस्तेमाल करके अपनी कक्षा के सर्वोत्तम तौर-तरीके शेयर करती हैं, नए आइडिया पर फ़ीडबैक लेती हैं, विभिन्न चुनौतियों के संबंध में मार्गदर्शन माँगती हैं, और गणित की टीचिंग-लर्निंग से जुड़ी नई-नई जानकारी और रणनीतियों से अवगत होती हैं। सुश्री रेखा ने इन समूहों के साथी मेंबरों द्वारा सुझाए गए कुछ ऑनलाइन कोर्स भी जॉइन कर लिए हैं। इन कोर्स से उन्हें अपने विद्यार्थियों के लिए नई-नई गतिविधियाँ और लेसन प्लान करने में मदद मिली है। ऑनलाइन मिले प्रोत्साहन और सराहना से प्रेरित होकर सुश्री रेखा ने HoS और अपने स्कूल के अन्य टीचर्स के साथ मिलकर स्कूल का सोशल मीडिया अकाउंट शुरु करने का संकल्प कर लिया है; उनके स्कूल से उपजने वाले नवाचारी और प्रभावी तौर-तरीकों को इस अकाउंट के ज़रिए दूर-दूर तक फैलाया जाएगा।

मॉडल उदाहरण पढ़ने के बाद इन सवालों के बारे में सोचें।

1. सोशल मीडिया के उपयोग से सुश्री रेखा को उनकी प्रेरणा बढ़ाने में कैसे मदद मिली?

2. सुश्री रेखा ने अपने स्कूल से बाहर की विभिन्न टीचर कम्यूनिटी से कैसे कनेक्ट किया?

3. मॉडल उदाहरण पढ़ने के बाद, इस बारे में कमेंट करें कि सोशल मीडिया टीचर्स और सहकर्मियों को जुड़ाव और आत्म सम्मान हासिल करने में किस तरह मदद दे सकता है?

सुश्री रेखा को सोशल मीडिया पर अपने सेह कर्मियों से प्रोत्साहन और सराहना मिली जिससे वे कई टीचर कम्यूनिटी से जुड़ने और अपने तौर-तरीकों व कोशिशों को सभी से शेयर करने को प्रेरित हुईं। इससे **उनके** आत्म सम्मान **और आत्मविश्वास में वृद्धि हुई** और अब वे अपने स्कूल का सोशल मीडिया पेज बनाकर इस पहल को और विस्तार देने के कार्य की अगुवाई कर रही हैं। इंटरनेट की सुविधा ने उन्हें एक जैसी रुचियों वाले टीचर्स की कम्यूनिटी के साथ **अर्थपूर्ण ढंग से** जुड़ने **और संवाद करने** का मंच दे दिया है।

कार्य योजना

अब आप समूहों में यह योजना बना सकते हैं कि आप अपने स्कूलों और कक्षाओं के प्रभावी तौर-तरीकों/कामयाबी की कहानियों को फैलाने और सम्मान व सराहना की संस्कृति की रचना करने के लिए सोशल मीडिया का उपयोग कैसे करेंगे।

ऐसे दो-तीन कदमों के बारे में सोचें जो आप इस योजना को पूरा करने के लिए उठाएँगे।

ध्यान दें: वैसे तो सोशल मीडिया के इस्तेमाल के कई लाभ हैं, पर यह भी ध्यान रखें कि सोशल मीडिया से एंगेज होने के अपने जोखिम भी हैं। ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्मों में ज़रुरत से ज़्यादा तल्लीनता और लापरवाही नुकसानदायक सिद्ध हो सकती है। सोशल मीडिया के लाभों का आनंद लेने के लिए, सुरक्षित इंटरनेट परिपाटियों से अवगत होना ज़रूरी है।

आप इस टॉपिक पर इन कुछ अतिरिक्त संसाधनों से मदद ले सकते हैं।

पठन संसाधन 1

पठन संसाधन 2

ए. आर.टी से सह-ए.आर.टी संचार

प्रभावी ए. आर.टी से सह-ए.आर.टी संचार होने के लिए, यह महत्वपूर्ण है कि ए.आर.टी बैठकें इस बात पर चर्चा करने के लिए स्थान प्रदान करें कि एआरटी सदस्य सह-एआरटी बैठकों की योजना किस प्रकार बनाएँगे ।

एआरटी बैठक में आप क्या कदम उठा सकते है जिस से एआरटी से सह-एआरटी संचार मज़बूत होगा. इसकी सूची बनाएं। अपने साथियों के साथ चर्चा करें और प्रतिक्रिया प्राप्त करें।

ART मीटिंग -1: सुरक्षा, जुड़ाव एवं आत्म सम्मान **के व्यावहारिक उदाहरण + समकक्ष** कक्षा अवलोकन

स्वागत है	**ART मीटिंग का क्रम**

संदर्भ तय करना	• ART मीटिंग 1 में टीचर्स का स्वागत करें। Energiser से शुरुआत करें।
	• स्कूल में टीचर्स की कोशिशों के लिए, विशेष रूप से, विद्यार्थियों के लिए उच्च आत्म सम्मान (हाई सेल्फ़-एस्टीम) को बढ़ावा देते हुए कक्षा में सुरक्षित,जुड़ाव वाला माहौल बनाए रखने की दिशा में उनकी कोशिशों के लिए उनकी सराहना करें।
	• LIC 11 को और *सुरक्षा,* जुड़ाव एवं आत्म सम्मान के मापदंड को फटाफट से दोहराएँ
	• ART मीटिंग का एजेंडा बताएँ 1 **(आप ART मीटिंग की अपनी प्रस्तुति को डिज़ाइन और व्यवस्थित करने के लिए इन एजेंडा बिंदुओं का उपयोग कर सकते हैं)**
	    ○ कक्षा में सुरक्षा, जुड़ाव एवं आत्म सम्मान को बढ़ावा देने के लिए विस्तारी सवाल-जवाब और याद्दाश्त से बताने के तौर-तरीके।
	    ○ समकक्ष कक्षा अवलोकन
	    ○ ART से सह-ART पर जाना

एजेंडा 1: कक्षा में सुरक्षा, जुड़ाव एवं आत्म सम्मान को बढ़ावा देने के लिए विस्तारी सवाल-जवाब और याद्दाश्त से बताने के तौर-तरीके	
परिचय	• कामयाबी के मापदंड (सुरक्षा, जुड़ाव एवं आत्म सम्मान) को संक्षेप में दोहराएँ • टीचर्स से पूछें कि वे कक्षा में सुरक्षा, जुड़ाव एवं आत्म सम्मान कैसे सुनिश्चित करते हैं?
मॉडल उदाहरण/रीडिंग मटेरियल	हैंडआउट में दिए गए मॉडल उदाहरण पढ़ें: <u>विस्तारी सवाल-जवाब और याददाश्त से बताने के तौर-तरीके।</u>
संदर्भ में रखना	मॉडल उदाहरण शेयर करने के बाद, हैंडबुक में मॉडल उदाहरण के बाद दिए गए सवालों पर सोच-विचार करवाएँ।

अभ्यास और योजना	• टीचर्स से कहें कि वे समूह बनाकर इस बारे में सोचें कि कक्षा में सुरक्षा/एंगेजमेंट और सेल्फ़-एस्टीम को बढ़ावा देने के लिए विस्तारी सवाल-जवाब को और जो भी याद्दाश्त से बताने के तौर-तरीके हैं उनको कैसे शामिल किया या ढाला जा सकता है। • ART समूह के सामने इसे प्रस्तुत करें।
फीडबैक	सुरक्षा, जुड़ाव एवं आत्म सम्मान के कामयाबी के मापदंड के आधार पर फ़ीडबैक दें।
एजेंडा 2: समकक्ष कक्षा अवलोकन	
समकक्ष कक्षा अवलोकन चर्चा	• ART मेंबरों से कहें कि वे समूह बनाकर इन सवालों पर सोच-विचार करें। ○ वे कक्षा अवलोकन के दौरान किन चीज़ों पर फ़ोकस करते हैं? समूह 1 ○ वे कक्षा में सुरक्षा, जुड़ाव एवं आत्म सम्मान का अवलोकन कैसे करते हैं? समूह 2 ○ वे अपनी कक्षाओं में अवलोकन और सोच-विचार कैसे कर सकते हैं? समूह 3 (समूह शेयरिंग के बाद, कक्षा अवलोकन के फ़ोकस क्षेत्र डॉक्यूमेंट, सुरक्षा/एंगेजमेंट और सेल्फ़-एस्टीम चेकलिस्ट, और आत्म अवलोकन करने के चरण शेयर करें) • समूह से पूछें - हम इन फ़ीडबैक को और प्रभावी कैसे बना सकते हैं? ○ *आपको कक्षा को और रोचक बनाना होगा!* समूह 1 ○ *कक्षा बहुत अच्छी थी। आपने लेसन बहुत अच्छे से संचालित किया* ○ आपने समझ के सवाल पूछकर नहीं देखे। जिस अवधारणा पर बात की जा रही थी, विद्यार्थी उसे समझ नहीं पा रहे थे। सामूहिक चर्चा के बाद संक्षेप में बताएँ - फ़ीडबैक ऐसा होना चाहिए • **स्पेसिफ़िक** • जिसमें **सोच-विचार** की गुंज़ाइश हो • **जो विद्यार्थी क्या कर रहे हैं इस बात पर और कक्षा की प्रक्रियाओं पर फ़ोकस करता हो**, न कि टीचर पर

	• जो कोई **कार्य योजना** सुझाता है
एजेंडा 3: ART से सह-ART पर जाना	
ART से सह-ART में जाने की कार्य योजना बनाना	• आप सह-ART मीटिंग में यह चर्चा किस तरह करने की योजना बना रहे हैं? (संलग्नक 3 की मदद लें) • कार्य योजना बनाने में टीचर्स को मदद दें।

ART मीटिंग का उद्देश्य सहकर्मियों से सीखने और स्कूल में तथा उसके बाहर सर्वोत्तम तौर-तरीकों को शेयर करने की संस्कृति को बढ़ावा देना है। हमारे स्कूल से बाहर की विभिन्न टीचर कम्यूनिटी तक पहुँचने के लिए, आइए ART 1 मीटिंग में हुई चर्चाओं के बारे में ट्वीट/पोस्ट करें। TDC प्रोग्राम के सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का उपयोग करें - https://bit.ly/m/tdcprogram

याद रखें:

1. पोस्ट/ट्वीट करते समय संबंधित हैशटैग इस्तेमाल करें
2. पोस्ट/ट्वीट अधिक लोगों तक पहुँचे इसके लिए अपने सहकर्मियों और TDC प्रोग्राम को टैग करें
3. अपने पोस्ट/ट्वीट को संदर्भ देने के लिए कोई उपयुक्त चित्र खींचें
4. सुनिश्चित करें कि ट्वीट/पोस्ट प्रामाणिक हो और उसमें दी गई जानकारी सही हो गलत जानकारी फैलाने या निगेटिव भाषा के इस्तेमाल से बचें।
5. कृपया छात्रों के चित्रों को ऑनलाइन साझा करने के बारे में सावधान रहें। तस्वीरें शेयर करते समय ध्यान दे की तस्वीर में छात्रों के चेहरे या कोई अन्य पहचान चिह्न न हो

TDCProgram tdcprogram tdcprogram tdcprogramdelhi

ART मीटिंग 2: हुक + सोच-विचारी चर्चाएँ (कोचिंग)

स्वागत है	ART मीटिंग का क्रम
संदर्भ तय करना	• ART मीटिंग 2 में टीचर्स का स्वागत करें। एनर्जी देने वाली किसी बात/गतिविधि से शुरुआत करें। • ART मीटिंग 2 का एजेंडा बताएँ **(आप ART मीटिंग की अपनी प्रस्तुति को डिज़ाइन और व्यवस्थित करने के लिए इन एजेंडा बिंदुओं का उपयोग कर सकते हैं)** ○ विस्तारी सवाल-जवाब और याद्दाश्त से बताने के तौर-तरीकों के ज़रिए सुरक्षा,जुड़ाव एवं आत्म सम्मान को बढ़ावा देने के अनुभव को संक्षेप में दोहराएँ और शेयर करें ○ हुक रणनीति ○ सहकर्मियों के साथ सोच-विचारी चर्चाएँ (कोचिंग) ○ ART से सह-ART पर जाना।
एजेंडा 1: पुनरावृत्ति	
चर्चा और सोच-विचार	कक्षा में सुरक्षा, जुड़ाव एवं आत्म सम्मान को बढ़ावा देने के लिए विस्तारी सवाल-जवाब और याद्दाश्त से बताने के तौर-तरीकों के उपयोग के अनुभवों का वर्णन माँगें।
एजेंडा 2: हुक रणनीति	
परिचय	हुक रणनीति का परिचय दें
मॉडल उदाहरण/रीडिंग मटीरियल	मॉडल उदाहरण पढ़ें
संदर्भ में रखना	चार मॉडल उदाहरण शेयर करने के बाद, इस पर विचार करें :

	1. सुश्री उमा ने लेसन में रुचि कैसे जगाई? 2. हुक दिनचर्या ने सुश्री उमा की कक्षा में सुरक्षा, जुड़ाव एवं आत्म सम्मान को किस तरह बढ़ावा दिया? *संकेत: सुरक्षा, जुड़ाव एवं आत्म सम्मान के कामयाबी के मापदंड के आधार पर चर्चा करें।*
अभ्यास और योजना	ART मेंबरों से कहें कि वे समूहों में बँटकर यह योजना बनाएँ कि वे अपनी कक्षाओं या विषयों में हुक रणनीतियों का उपयोग कैसे कर सकते हैं।
फीडबैक	जब हर टीचर समूह को अपनी कक्षा में हुक रणनीति के इस्तेमाल के बारे में सोचने का मौका मिल चुका हो, तो वे पूरे समूह से उसे शेयर करके फ़ीडबैक ले सकते हैं।
एजेंडा 3: सोच-विचारी चर्चाएँ (कोचिंग)	

सोच-विचारी चर्चा सत्र	• चरण 1: चर्चा करें कि सोच-विचार (चिंतन) क्या है। सोच-विचार और उसके उद्देश्य के बारे में समझाएँ।
	• चरण 2: सोच-विचारी चर्चाओं के मॉडल उदाहरण पढ़ें।
	• चरण 3: समूहों में बँटकर चर्चा करें और इन सवालों के जवाब दें।
	  ○ प्रभावी सोच-विचारी चर्चा को बढ़ावा देने के लिए वृंदा ने क्या किया?
	  ○ और अधिक प्रभावी सोच-विचारी चर्चा को बढ़ावा देने के लिए वृंदा क्या चीज़ अलग ढंग से कर सकती थीं?
	  ○ आपके अनुसार, सहकर्मियों से सोच-विचारी चर्चा करने के ज़रूरी पहलू क्या हैं?
	• टीम को किसी सोच-विचारी चर्चा की कामयाबी के मापदंड बताएँ।

एजेंडा 4: ART से सह-ART पर जाना।	
ART से सह-ART में जाने की कार्य योजना बनाना	• आप सह-ART मीटिंग में यह चर्चा किस तरह करने की योजना बना रहे हैं? (संलग्नक 3 की मदद लें) • कार्य योजना बनाने में टीचर्स को मदद दें। • सह-ART मीटिंग 1 के संचालन का अनुभव शेयर करना

ध्यान दें: अगली ART मीटिंग के लिए उन रणनीतियों और तरीकों को दस्तावेज़ी रूप दें जिनसे आप अपनी कक्षा में सुरक्षा, जुड़ाव एवं आत्म सम्मान को बढ़ावा दे सकते हैं। यह दस्तावेज़ वीडियो या लिखित रूप में हो सकता है। इस दस्तावेज़ी भंडार को बाद में सुरक्षा, जुड़ाव एवं आत्म सम्मान को बढ़ावा देने वाली रणनीतियों के संसाधन संग्रह के रूप में शेयर किया जा सकता है।

आइए इस बारे में ट्वीट/पोस्ट करें कि हमने हमारी विषय कक्षाओं में सुरक्षा, जुड़ाव एवं आत्म सम्मान को बढ़ावा देने के लिए हुक रणनीति का इस्तेमाल किस तरह किया। TDC प्रोग्राम के सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म इस्तेमाल करें - https://bit.ly/m/tdcprogram

याद रखें:

1. पोस्ट/ट्वीट करते समय संबंधित हैशटैग इस्तेमाल करें
2. पोस्ट/ट्वीट अधिक लोगों तक पहुँचे इसके लिए अपने सहकर्मियों और TDC प्रोग्राम को टैग करें
3. अपने पोस्ट/ट्वीट को संदर्भ देने के लिए कोई उपयुक्त चित्र खींचें
4. सुनिश्चित करें कि ट्वीट/पोस्ट प्रामाणिक हो और उसमें दी गई जानकारी सही हो . गलत जानकारी फैलाने या नेगेटिव भाषा के इस्तेमाल से बचें।
5. कृपया छात्रों के चित्रों को ऑनलाइन साझा करने के बारे में सावधान रहें। तस्वीरें शेयर करते समय ध्यान दे की तस्वीर में छात्रों के चेहरे या कोई अन्य पहचान चिह्न न हो

TDCProgram tdcprogram tdcprogram tdcprogramdelhi

ART मीटिंग 3: रिव्यू और शिक्षा में सोशल मीडिया

स्वागत है	ART मीटिंग का क्रम

संदर्भ तय करना	• ART मीटिंग 3 में टीचर्स स्वागत करें। एनर्जी देने वाली किसी बात/गतिविधि से शुरुआत करें।
	• कक्षा में सुरक्षा/एंगेजमेंट/सेल्फ़-एस्टीम की व्यावहारिक रणनीतियाँ लागू करने की कोशिशों के लिए टीचर्स की सराहना करें।
	• ART मीटिंग 3 का एजेंडा बताएँ **(आप अपनी प्रस्तुति को डिज़ाइन और व्यवस्थित करने के लिए इन एजेंडा बिंदुओं का उपयोग कर सकते हैं)**
	  ○ LIC 12 के समग्र लक्ष्य की पुनरावृत्ति करें
	  ○ समेकित तौर-तरीकों के आधार पर उनकी कक्षा में सुरक्षा, जुड़ाव एवं आत्म सम्मान की व्यावहारिक रणनीतियाँ लागू करने के उदाहरण शेयर करें
	  ○ सोशल मीडिया: सहकर्मियों से प्रभावी तौर-तरीके सीखना और शेयर करना।
	  ○ सह-ART मीटिंग संचालन शेयर करने पर फ़ोकस करें

एजेंडा 1: LIC 12 के समग्र लक्ष्य की पुनरावृत्ति करें	
चर्चा	**LIC 12 की थीम पर सोच-विचार: समर्थ बनाने वाले लर्निंग के माहौल की रचना** • LIC 12 का लक्ष्य क्या था? • क्या-क्या कवर किया गया था? • इस LIC से आपकी मुख्य लर्निंग क्या हैं?

शेयर करना/मदद और फ़ीडबैक	.
	• समकक्ष कक्षा अवलोकन पर सोच विचार और सोच-विचारी चर्चाएँ
	  ○ इस बार क्या चीज़ें कामयाब रहीं?
	  ○ आप क्या चीज़ अलग ढंग से करना चाहेगें?
	• ART मेंबरों की ओर से फ़ीडबैक और मदद
	कनेक्ट- डिसकनेक्ट- कनेक्ट ढाँचे पर ज़ोर दें

कार्य योजना बनाएँ	ART मेंबर्स से मिले फ़ीडबैक के आधार पर एक कार्य योजना बनाएँ

	• *मेरी कक्षा में क्या चीज़ें कामयाब रहीं?* • *सुरक्षा, जुड़ाव एवं आत्म सम्मान को बढ़ावा देने के लिए मैं क्या चीज़ें अलग ढंग से करूँगा/गी?*
एजेंडा 2: समेकित तौर-तरीकों के आधार पर उनकी कक्षा में सुरक्षा, जुड़ाव एवं आत्म सम्मान की व्यावहारिक रणनीतियाँ	
शेयर करना और कार्य योजना	• सुरक्षा, जुड़ाव एवं आत्म सम्मान की व्यावहारिक रणनीतियाँ लागू करने के अनुभव को शेयर करना। • चर्चा करें कि आप व्यावहारिक रणनीतियों की सूची कैसे तैयार कर सकते हैं
एजेंडा 3: सोशल मीडिया- सहकर्मियों से सीखना और प्रभावी तौर-तरीके शेयर करना	
सोशल मीडिया और शिक्षा	**<u>सोशल मीडिया</u>** 1. सुश्री रेखा की कक्षा का **मॉडल उदाहरण पढ़ें**। 2. मॉडल उदाहरण पढ़ने के बाद **इन सवालों के बारे में सोचें** और चर्चा करें • सोशल मीडिया के उपयोग से सुश्री रेखा को उनकी प्रेरणा बढ़ाने में कैसे मदद मिली? • सुश्री रेखा ने अपने स्कूल से बाहर की विभिन्न टीचर कम्यूनिटी से कैसे कनेक्ट किया? • मॉडल उदाहरण पढ़ने के बाद, इस बारे में कमेंट करें कि सोशल मीडिया टीचर्स और सहकर्मियों को सेल्फ़-एस्टीम और एंगेजमेंट हासिल करने में किस तरह मदद दे सकता है? **3. कार्य योजना** अब आप समूहों में यह योजना बना सकते हैं कि आप अपने स्कूलों और कक्षाओं के प्रभावी तौर-तरीकों/कामयाबी की कहानियों को फैलाने और सम्मान व सराहना की संस्कृति की रचना करने के लिए सोशल मीडिया का उपयोग कैसे करेंगे। ऐसे दो-तीन कदमों के बारे में सोचें जो आप इस योजना को पूरा करने के लिए उठाएँगे।
एजेंडा 4: सह-ART संचालन शेयर करना	
ART से सह-ART	• आप सह-ART मीटिंग में यह चर्चा किस तरह करने की योजना बना रहे हैं? (संलग्नक 3 की मदद लें) • कार्य योजना बनाने में टीचर्स को मदद दें। • सह-ART मीटिंग 2 के संचालन का अनुभव शेयर करना
आगे के चरण	ART मेंबर्स के साथ सहयोग करते हुए वे दो मुख्य बदलाव तैयार करें जो आप सह-ART मीटिंग के संचालन के दौरान लागू करेंगे

संलग्नक 1

'हुक' के कुछ उदाहरण:

'हुक' को इन कुछ तरीकों से डिज़ाइन किया जा सकता है। यह पूरी सूची नहीं है, आप जो कुछ कर सकते हैं वह केवल आपकी कल्पना द्वारा सीमित है!

1. **व्यक्तिगत जुड़ाव:** इस बारे में बात करें कि आपको इस टॉपिक में रुचि क्यों है। इससे विद्यार्थियों को टीचर से जुड़ने में मदद मिलती है।
   जैसे मुझे यह इसलिए पसंद है क्योंकि... आज के लेसन से मुझे दो हफ़्ते पहले मेरे साथ हुई एक घटना याद आती है।

2. **सामान (Prop):** विद्यार्थी आसानी से कल्प ना कर पाएँ इसके लिए किसी वस्तु या वस्तु संग्रह का उपयोग करें।
   जैसे इस आकृति को त्रिभुज कहते हैं (माचिस की तीलियों से बना मॉडल दिखाते हुए)। त्रिभुज की कितनी भुजाएँ होती हैं? अगर मैं एक और भुजा जोड़ दूँ तो क्या होगा? क्या हर भुजा की लंबाई बराबर होना ज़रूरी है?

3. **कहानी / उदाहरण:** कोई छोटी-सी आकर्षक कहानी सुनाएँ या कोई उदाहरण प्रस्तुत करें।
   जैसे मैं आपको एक कहानी सुनाऊँगा/गी जिससे आप यह कल्पना कर पाएँगे कि विद्युत के आविष्कार से पहले जीवन कैसा हुआ करता था... (विद्युत के लेसन के परिचय के लिए)

4. **समानता / उपमा:** किसी दिलचस्प समानता या उपमा का इस्तेमाल करके लेसन को विद्यार्थी के दैनिक जीवन से जोड़ें।
   जैसे सोचो कि अगर आपकी साइकिल में केवल एक पहिया होता। क्या आप उसे चला पाते? आज हम जो जानने जा रहे हैं वह भी कुछ ऐसा ही है...

5. **पहेली:** किसी ऐसी पहेली से विद्यार्थियों में उत्सुकता जगाएँ जो उन्हें सोचने पर मज़बूर कर दे।
   जैसे वह क्या है जिसके पास सुइयाँ हैं पर वह सिलाई नहीं कर सकती? (घड़ी)

6. **अचरज / झटका:** कुछ ऐसा कहें जिससे विद्यार्थियों को झटका लगे।
   जैसे क्या आप जानते हैं कि आज की हमारी दुनिया में लगभग 6,500 अलग-अलग भाषाएँ बोली जाती हैं?

7. **खेल / गतिविधि:** विद्यार्थियों से कुछ करवाएँ और उसे लेसन से जोड़ें।

जैसे अनुमान लगाने का खेल खिलवाएँ जिनमें विद्यार्थी कुछ अवधारणाओं का अभिनय करके दिखाएँगे और बाकी की कक्षा उनका अनुमान लगाएगी, उसके बाद उन्हें वे अवधारणाएँ सिखाएँ।

8. **मीडिया:** कोई चित्र, समाचार की कतरन, कोई छोटा-सा संगीत या बहुत छोटा वीडियो।

   जैसे जंगल की आग का एक चित्र थामकर रखें, कुछ पल रुकें ताकि आपके सारे विद्यार्थी उसे ठीक से देख लें, और फिर उनसे पूछें कि उन्होंने क्या देखा।

9. **उत्सुकता जगाने वाला विज्ञापन:** किसी फ़िल्म के लिए उत्सुकता जगाने वाले विज्ञापन की तरह, संक्षेप में बताएँ कि लेसन में क्या-कुछ होगा, और जो कुछ बताएँ उसे पूरा करना न भूलें।

   जैसे आज की क्लास के बाद आप ये चीज़ें कर पाएँगे...

10. **कोई बढ़िया सवाल:** कभी-कभी एक बढ़िया-सा सवाल ही लेसन को अच्छी शुरुआत देने के लिए काफ़ी होता है।

    जैसे वर्षा कहाँ से आती है? इंद्रधनुष कैसे बनता है?

हुक रणनीति के लिए अतिरिक्त पठन लिंक

HTTPS://WWW.WILEY.COM/EN-US/NETWORK/EDUCATION/INSTRUCTORS/TEACHING-STRATEGIES/7-WAYS-TO-USE-THE-HOOK-TO-GRAB-STUDENTS-ATTENTION

https://www.trueeducationpartnerships.com/schools/use-of-hooks-into-lessons/

संलग्नक 2

अवलोकनकर्ता बनने का कौशल

पिछले LIC में हमने अवलोकन करने के तरीके के विभिन्न पहलुओं पर बात की थी। इस अनुभाग में हम इस बारे में सोच-विचार करेंगे कि प्रेक्षक को खुद को किस तरह स्थित करना चाहिए ताकि अवलोकन की प्रक्रिया पॉज़िटिव और रचनाशील हो।

आइए नीचे दिया गया उदाहरण देखें:

उदाहरण 1 गीता मैम ने पिछले हफ़्ते पूनम मैम (उनके स्कूल की गणित की टीचर) के एक कक्षा सत्र का अवलोकन किया। गीता मैम जब कक्षा चल रही थी तभी बीच में ही कक्षा में प्रवेश कर गईं। सभी विद्यार्थियों ने उठकर उनका अभिवादन किया। वे फटाफट ब्लैकबोर्ड के पास बैठ गईं और सत्र का अवलोकन करने के लिए तैयार हो गईं। वे अपने अवलोकन एक नोटबुक में लिखती रहीं। लगभग दस मिनट बाद गीता मैम ने पूनम मैम से लेसन प्लान बताने और उस दिन का टॉपिक समझाने का अनुरोध किया। पूनम मैम ने फटाफट प्लान बताया और फिर बच्चों को निर्देश देना जारी रखा। पूनम मैम लेसन आगे बढ़ाती रहीं और इस दौरान गीता मैम ने कक्षा में घूमकर विद्यार्थियों की नोटबुक जाँची। लेसन के अंत के समीप गीता मैम उठीं और कक्षा से चली गईं जबकि लेसन जारी रहा।

ऊपर बताए गए उदाहरण में किए गए अवलोकन के बारे में आप क्या सोचते हैं?

सब जानते हैं कि प्रेक्षक की मौजूदगी कक्षा सत्र पर, विद्यार्थियों के व्यवहार पर और लेसन संचालित कर रहे टीचर के व्यवहार पर असर डालती है (Wragg, 1999)। इसलिए प्रेक्षक को यह कोशिश करनी चाहिए कि उसकी मौजूदगी डराने वाली न हो, और उसे इन अवलोकन के लिए एक सुरक्षित और मददगार माहौल बनाने की दिशा में कार्य करना चाहिए।

प्रेक्षक के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वह बच्चों का ध्यान अपनी ओर न खिंचने दे, इसके लिए उसे टीचर को टोकने से बचना चाहिए, सत्र शुरु होने से पहले ही कक्षा में आ जाना चाहिए, और पूरे सत्र के दौरान कक्षा में ही बने रहना चाहिए। कक्षा में प्रेक्षक को वहाँ बैठना चाहिए जहाँ से वह कक्षा की घटनाओं को देख सके पर वह खुद सत्र में बाधा न बने (वॉकर और एडलमैन, 2005)। साथ ही, प्रेक्षक को कक्षा में यहाँ-वहाँ जाने से बचने की कोशिश करनी चाहिए, तब के सिवाय जब किसी सामूहिक/समकक्ष गतिविधि के अवलोकन के लिए ऐसा करना ज़रूरी हो।

कक्षा विद्यार्थी और टीचर के बीच का एक बेहद निजी स्थान होती है और प्रेक्षकों को अपने कार्य की शुरुआत कक्षा में आने की अनुमति माँगकर करनी चाहिए और टीचर की इस बात के लिए सराहना करनी चाहिए कि उसने उन्हें कक्षा में आने की अनुमति दी। इसी प्रकार, अवलोकन के बाद सोच-विचारी चर्चा करना भी बेहद ज़रूरी होता है।

कक्षा अवलोकन में क्या करें और क्या न करें

पिछले अनुभाग में दिए गए मॉडल उदाहरण पर आपके सोच-विचार और LIC 11 के साथ आपके एंगेजमेंट के आधार पर, ART मेंबर्स और मेंटर्स के साथ सहयोग करते हुए उन 'क्या करें और क्या न करें' की सूची बनाएँ जिन्हें स्कूल में किसी भी कक्षा अवलोकन के लिए ध्यान में रखा जाना चाहिए। हमने यहाँ कुछ उदाहरण दिए हैं

- टीचर को न टोकें
- टीचिंग शुरु न कर दें
- अनुमान न लगाएँ/धारणाएँ न बनाएँ, अनुमान के आधार पर निष्कर्ष न सुनाएँ
- सत्र के बीच में विद्यार्थियों से बात न करें
- यहाँ-वहाँ न टहलें, तब के सिवाय जब किसी सामूहिक गतिविधि या कार्य का अवलोकन कर रहे हों
- अनुमति ज़रूर लें और अवलोकन की योजना काफ़ी पहले से बना लें
- बच्चों व टीचर का ध्यान अपनी ओर खींचने से बचें
- टीचर को धन्यवाद ज़रूर दें कि उसने आपको उसकी कक्षा में बुलाया
- अवलोकन से पहले और बाद में बातचीत ज़रूर करें
- समय पर पहुँचें और पूरे सत्र का अवलोकन करें

संलग्नक 3

ART से सह-ART पर जाना

पिछले LIC में हमने ART से सह-ART पर जाने के बारे में बात की थी। ART से सह-ART संचार को मज़बूती देने के लिए, हमें हमारी ART मीटिंग में सह-ART मीटिंग की योजना पर चर्चा करने की जगह देना जारी रखना होगा।

निम्नलिखित डी-ब्रीफ़ दस्तावेज़ ART के सदस्यों के साथ सह-ART की योजना बनाने के कार्य पर सोच-विचार करने में मदद देगा।

चरण 1 : **आप सह ART मीटिंग (1/2/3) में क्या बताएँगे?**	
चरण 2: **आप चर्चा को व्यवस्थित कैसे करेंगे?**	
चरण 3 : **सहकर्मी कक्षा अवलोकन और खुद अवलोकन तथा सोच-विचारी चर्चा के लिए प्रतिबद्धता।**	
चरण 4: **संभावित चुनौतियाँ और ज़रूरी मदद**	